# 10

# ikFkfed Lrj ij dk;kuHko dh xfrfof/k;k& iLrkfor ;k fu/kkfjr

**'kkjnk dekjh***

*कक्षा में पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता देना आवश्यक है। इस प्रकार की स्वतंत्रता से जहाँ बच्चों को अपनी पसंद का कार्य करने का अवसर मिलता है, वहीं वे समूह में रहकर कार्य करना भी सीखते हैं, और गुमसुम रहने वाले बच्चे भी अपनी रुचि के कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राथमिक स्तर पर कार्यानुभव की गतिविधियाँ काराई जाती हैं। क्या हों ये गतिविधियाँ? इन्हें कैसे करवाया जाए? इन्हीं सवालों का जवाब दे रहा है यह लेख।*

पश्चिमी दिल्ली का प्राथमिक विद्यालय और उसकी पाँचवी कक्षा का दृश्य है। कक्षा के कुछ विद्यार्थी बड़ी तल्लीनता से किसी कार्यकलाप में जुटे हुए हैं। कुछ विद्यार्थी कक्षा के कोने में अनमने भाव से बैठे हैं और कुछ अपने बस्ते में से सामान निकालते हैं, उसे देखते हैं फिर निराश होकर वापिस बस्ते में डाल देते हैं। शिक्षिका का ध्यान इन दोनों समूहों की ओर नहीं है। वह बीच-बीच में उपेक्षित-सी नज़र इन बच्चों पर डालती हैं और कुछ कठोरता के साथ कहती हैं, "कल सामान ज़रूर लाना, नहीं तो कक्षा के बाहर खड़ा कर दूँगी।" बच्चों के मुख पर पुन: एक बेचैनी और निराशा एक साथ हो उठती है। क्या इस दृश्य से आप कुछ अनुमान लगा पाए?

आपको अनुमान लगाने में हम कुछ मदद करते हैं। दरअसल, अध्यापिका यहाँ कार्यानुभव से संबंधित कार्यकलाप करवा रही है-

"अनुपयोगी से उपयोगी सामग्री बनाना (Utility Article with Waste material) इस कार्य हेतु उन्होंने बच्चों को सामग्री की एक सूची दी थी। सूची इस प्रकार थी-

- आधा मीटर जूट
- सात-आठ सरकंडे
- सूखी तुरई
- गोल और चौकोर शीशे
- लाल रंग की कतरनें और काले रंग का ऊन का गोल

फेविकोल, कैंची, पैमाना, पैंसिल इत्यादि सामान की सूची अध्यापिका ने छात्रों एक सप्ताह पहले ही दे दी थी और बीच-बीच में बच्चों को सामग्री एकत्रित करने के लिए याद भी दिलवाती रहीं। परंतु निश्चित दिन सभी बच्चे आवश्यक सामग्री लाने में असमर्थ रहे।

जो बच्चे सामग्री ले आए वे अध्यापिका के

* वरिष्ठ प्रवक्ता, मं.शि.प्र.सं., आर.के.पुरम., नयी दिल्ली

विशेष पात्र बनकर कार्यकलाप में जुटे नज़र आए। कुछ विद्यार्थी थोड़ी बहुत सामग्री जुटा पाए थे, वे बार-बार अपने बस्ते में सामग्री को उलट-पलट रहे थे, इस आशा से कि जादू से कुछ और बस्ते के अंदर आ जाए। और कुछ भी न ला पाने वाले अनमने भाव से एक ओर बैठे नज़र आए।

आप विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के बारे में एक विशेष समझ रखते हैं। क्या आप उन कारणों की चर्चा कर सकते हैं जिनके रहते कुछ बच्चे सभी वस्तुएँ ला पाए, कम ला पाए और कुछ ला ही नहीं पाए?

- संभवतया: निर्धारित समय पर सभी प्रकार की सामग्री ला पाने वाले बच्चों के माता-पिता उनकी पढ़ाई के विषय में विशेष रूप से जागरूक और शायद आर्थिक दृष्टि से सबल होंगे।
- संभवत: अध्यापिका द्वारा कही गई प्रत्येक सामग्री न ला पाने वाले बच्चों के परिवेश में वे सरलता से उपलब्ध न हों और बाज़ार से खरीदने की सामर्थ्य न रखते हों।
- यह भी एक कारण हो सकता है कि बच्चे इस सामग्री की अपेक्षा कुछ और विकल्प खोजना चाह रहे हों। कहने का तात्त्पर्य यह है कि उन्हें इस प्रकार की सामग्री के साथ कार्य करने की तनिक भी रुचि न हो। और भी कारण हो सकते हैं।

आपके सामने एक और दृश्य प्रस्तुत है। छठी कक्षा में कार्यानुभव का सत्र है और कार्यकलाप का नाम है-'श्यामपट्ट की पुताई'

कक्षा में सभी बच्चों का उत्साह देखते बन रहा है। एक आम सहमति से यह प्रस्ताव पारित हुए-

- कुछ बच्चे बैटरी के पुराने सैल इकëा करेंगे,
- कुछ बच्चे सैल के अंदर की कालिख का पाउडर बनाएंगे,
- कुछ बच्चे घोल बनाने के लिए बाल्टी/डिब्बा और एक-दो पुराने कपड़े लाएंगे।
- कुछ बच्चे पुताई का कार्य करेंगे।

सबसे रुचिकर बात यह है कि इस कक्षा में एक पोलियोग्रस्त विद्यार्थी थी, उसे भी उत्तरदायित्व दिया गया। अर्थात् सभी को किसी न किसी प्रकार का काम दिया गया और सभी एक उत्तरदायित्व की भावना के साथ काम पूरा करने में जुटे थे।

दोनों ही स्थितियों में कार्यानुभव संबंधी गतिविधि याँ चल रही हैं।

**पहली स्थिति में**

सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित नहीं की जा सकी क्योंकि एक विशेष प्रकार की सामग्री लाने का दबाव था।

**दूसरी स्थिति में**

सभी बच्चों की बराबर की भागीदारी के साथ-साथ सभी में एक विशेष प्रकार का उत्साह था क्योंकि-

- बच्चों ने कार्यकलाप हेतु कुछ खरीदना नहीं था वरन् अपने आसपास ही खोजना था।
- बच्चों को स्वयं निर्णय लेने की स्वतंत्रता दी गई थी।
- किसी विद्यार्थी विशेष से यह अपेक्षा नहीं की गई कि वह ही बैटरी के सेल खोजे, पुराने कपड़े लाए या कोई अन्य कार्य करे वरन्

बच्चों ने अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार कार्यों का चुनाव किया।

- बच्चों के समक्ष कार्यकलाप के उद्देश्य एकदम स्पष्ट थे - अपनी कक्षा के श्यामपट्ट की पुताई करना।
- इस कार्यकलाप में कक्षा के सभी बच्चों के करने के लिए 'कुछ-न-कुछ' अवश्य था। ऐसा नहीं था कि एक विशेष प्रकार की रुचि रखने वाले बच्चे ही इस कार्य को कर सकते हों।

ऊपर उल्लिखित उदाहरणों के आधार पर हम सरलतापूर्वक उन आवश्यक मापदण्डों के बारे में जान सकते हैं जिनके आधार पर कार्य अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत करवाई जाने वाली गतिविधियों का चयन किया जाए-

1. सर्वप्रथम यह ध्यान रखना आवश्यक है कि करवाए जाने वाले कार्यलाप में 'कार्यानुभव' के उद्देश्य निहित हों। कार्य अनुभव का प्रत्येक कार्यकलाप सोद्देश्य और अर्थपूर्ण होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि हर कार्यकलाप से सभी उद्देश्यों की पूर्ति होती हो।
2. कार्य अनुभव के कार्यकलापों का चयन करते समय हमारे लिए उन बच्चों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवेश की जानकारी तथा समझ बहुत आवश्यक है जिनसे कार्यकलाप करवाए जाने हैं।

**आप कारण अवश्य जानना चाहेंगे।**

एक अध्यापिका अपने विद्यार्थियों से 'डॉल कार्नर' (गुड़िया का कोना) बनवाए जाने के प्रति बहुत ही उत्साहित थीं। इस कार्यकलाप हेतु बहुत-सी सामग्री तो वे स्वयं घर से लाईं पर विद्यार्थी उनकी कल्पना को साकार रूप नहीं दे पा रहे थे। ऐसा नहीं कि 'डॉल कार्नर' बनाने की प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण नहीं थी। बच्चे मिल-जुलकर रंग योजना पर विचार करते, डॉल कार्नर में रखी जाने वाली वस्तुओं के आकार-प्रकार, रूप आदि के समायोजन पर विचार करते, वस्तुओं के स्रोतों और उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त करने गुमसुम रहने वाले बच्चे भी पर सोचिए एक या दो कमरों के मकान में अथवा स्लम संस्कृति में पनपने वाले बच्चे, जिनकी डॉल (गुड़िया) आम तौर पर डंडी पर लिपटी हुई पुरानी कतरन होती है और उस पर कालिख या काले डोरे से आँख, बाल आदि बना दिए जाते हैं, किसी सजे-सजाए पृथक् 'डॉल कार्नर' की कल्पना को साकार कैसे कर सकती है? वे तरह-तरह की कतरनों या रूई या फिर ऊन आदि से आकर्षक गुड़िया/गुड्डा तो बना सकेंगे परंतु सोफासेट पलंग, परदों वाला 'डॉल कार्नर' बनाने में पूरी तरह सक्रिय न हो पाएँगे। कहने का तात्पर्य यह है कि कार्यकालाप बच्चों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि में प्रासंगिक हों। वे उनके सामाजिक सरोकारों को प्रतिबिंबित भी करते हों।

**पूर्वग्रहों और असंतुलनों से दूर**

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान अनेक शिक्षकों से खुल कर चर्चा करने के अवसर प्राप्त होते हैं। उनके साथ की गई चर्चाओं के आधार पर यह बात एकदम स्पष्ट है कि हममें से अधिकांश शिक्षक अनेक प्रकार के पूर्वग्रहों से ग्रस्त हैं। उदाहरण के तौर पर एक मुख्य अध्यापिका नेतृत्व की भावना से जुड़े कार्य

जैसे बालसभा का आयोजन, विद्यार्थियों की पंक्तियाँ बनवाना, ड्रिल, व्यायाम आदि करवाना लड़कों से ही करवाती हैं, क्योंकि उनके अनुसार लड़कियाँ इस प्रकार के कार्यों को कुशलतापूर्वक नहीं कर सकतीं। वे लड़कियों से सफ़ाई, पानी का प्रबंध, पुष्पसज्जा आदि कार्य करवाती हैं। इसी प्रकार एक अध्यापक बागवानी से जुड़े कार्यों में लड़कियों को सम्मिलित नहीं करते और कक्षा में यदि शारीरिक रूप से चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चे भी हैं तब उन्हें तो यह कहकर छोड़ दिया जाता है–"अरे, तुम तो कर ही नहीं पाओगे। तुम्हें तकलीफ़ होगी उठने बैठने में। तुम रहने दो।"

हमें इन सभी पूर्वग्रहों और भेदभाव से मुक्त होने के लिए संघर्ष करना है। कार्यानुभव कार्यक्रम हेतु वांछित सफलता के लिए हमें ऐसी स्थितियाँ बनानी होंगी जिनमें समानता को बढ़ाने पर विशेष बल दिया जाए। इसके लिए–

- लैंगिक भेदभाव और लैंगिक पूर्वग्रह मिटाना अत्यंत आवश्यक है। यह कदापि न सोचें कि अमुक कार्य लड़कियों से करवाना है और अमुक कार्य मात्र लड़कों से। प्रत्येक कार्य में दोनों की ही भागीदारी आवश्यक है। ऐसा करके हम एक ऐसे वातावरण का विकास कर सकते हैं जिसमें लड़के-लड़कियाँ दोनों का समान रूप से पोषण होगा, दोनों समान रूप से सक्षम होंगे, एक दूसरे के प्रति संवेदनशील होंगे और एक दूसरे की चिंता से जुड़कर एक दूसरे के साथ समान रूप से भागीदार बनेंगे। दोनों में ही हर क्षेत्र से जुड़े जीवन कौशलों का विकास हो, ऐसी हमारी कोशिश होनी चाहिए।
- शारीरिक रूप से चुनौती वाले बच्चों के लिए भी आप द्वारा चुनी गई गतिविधि में संभावना अवश्य होनी चाहिए। इस क्षेत्र में बच्चे स्वयं बहुत संवेदनशील होते हैं। वे ऐसा कोई-न-कोई कार्य अवश्य ढूँढ लेते हैं जिससे विशेष चुनौती वाले बच्चे भी गतिविधि का एक प्रमुख हिस्सा बन सकें। उदाहरण के तौर पर एक विद्यालय में बच्चों को आस-पास के परिवेश से पत्तियों का संग्रह और उनके नाम की जानकारी का कार्य दिया गया। उस कक्षा की एक बालिका चलने में असमर्थ थी। अध्यापिका अभी इस बारे में सोच ही रही थीं कि अमुक बालिका इस कार्य को कैसे कर पाएगी कि बच्चों ने सुझाव दिया– "महोदया, क्यों न हम चुने गए पत्तों के *Botanical Name* भी जानें और यह काम 'सरोज' (उल्लिखित बालिका) को सौंप दें।" इस सुझाव पर सरोज तो लगभग झूम ही उठी कि उसे इतना महत्वपूर्ण कार्य दिया जा रहा है। नहीं तो उसके मन में तरह-तरह की शंकाएँ घुमड़ रही थीं।

**हममें से बहुत से शिक्षकों के मन में अपनी-अपनी कक्षा के बच्चों को लेकर तरह-तरह के पूर्वाग्रह अथवा भ्रांतियाँ होंगी।**

- अलग-अलग सामाजिक और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से आए बच्चों की क्षमता को लेकर।
- जाति विशेष के बच्चों की योग्यता और कार्य क्षमता को लेकर।

सामाजिक परिवेश, जातिगत पृष्ठभूमि अमीर, और गरीब बच्चों के विकास और सीखने की गति को प्रभावित तो कर सकता है पर उनकी बौद्धिक क्षमता का निर्धारण नहीं करता। अतः कार्यकाल का चयन करते समय बच्चों के

संबंध में बने पूर्वग्रहों को भूलना ही उपयुक्त होगा अन्यथा आप मानव संचेतना की समस्त सर्जनात्मक शक्तियों को प्रस्फुटित करने का अवसर खो देंगे। कार्यकलापों के चुनाव में यह बात अवश्य ध्यान में रखें कि कक्षा के सभी बच्चे अपनी पूर्ण क्षमतानुसार कार्य कर सकें।

**बच्चों का स्तर, रुचि एवं आवश्यकताएँ**

कार्यकलाप का चयन और बच्चों का शारीरिक, मानसिक विकास दोनों का आपस में गहरा संबंध है। कार्य अनुभव का एक महत्वपूर्ण कार्यकलाप है- 'कक्षा-कक्ष की सफ़ाई।' प्राथमिक विद्यालय में पहली से लेकर पाँचवी कक्षा के बच्चों को यह कार्यकलाप करवाया जाना चाहिए। पर क्या कार्य का प्रारुप प्रत्येक कक्षा में एक समान ही रहेगा। निश्चित रूप से नहीं। पहली कक्षा के बच्चों से यह अपेक्षा की जा सकती है कि कक्षा में इधर-उधर पड़े कागज़ आदि के टुकड़ों को कूड़ेदान में डाल दें। अन्य कक्षाओं के बच्चे अपनी शारीरिक और मानसिक परिपक्वता के अनुसार कक्षा-कक्ष में झाड़ू लगाना, कक्षा की अलमारियों में साफ़-सुथरा कागज़ बिछाना, जाले उतारना आदि का कार्य कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षक बच्चों की क्षमताओं का अवश्य ध्यान रखें।

शारीरिक और मानसिक क्षमता के साथ-साथ बच्चो की रुचि और आवश्यकताएँ भी महत्त्वपूर्ण हैं। बच्चे यदि बागवानी के कार्यकलापों में अधिक रुचि ले रहे हैं तो बागवानी से ही जुड़ी कुछ ऐसी गतिविधियाँ ले सकते हैं जो बहुउद्देश्यीय हों।

इस विषय को लेकर आमतौर पर शिक्षक दो प्रकार की शंकाएँ प्रस्तुत करते हैं-

1 कक्षा में 40 बच्चे हैं, सभी की रुचि भिé-भिé है, ऐसी स्थिति में क्या किया जाए?

2 क्या बच्चों के अंदर किसी नवीन वस्तु/घटना/कार्यकलाप के प्रति रुचि न उत्पé करें?

ज़रा सोचिए, क्या आप पूरे सत्र भर में एक-दो कार्य, कलाप ही करवाएँगे। यदि आपने बीस कार्यकलाप भी करवाए तो कक्षा के आधे बच्चों की रूचि के कार्यकलाप तो शामिल हो ही गए। इस प्रकार बहुत से बच्चों की रुचियाँ शामिल हो गईं। अब रही बात नई रुचियाँ जाग्रत करने की, वह तो एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, ज्यों-ज्यों कार्यकलापों में बच्चों की स्वयं की भागीदारी बढ़ती जाएगी, वे नए ज्ञान के साथ-साथ नयी रुचियों और दृष्टिकोणों का भी विकास करेंगे।

हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि कार्य करने करवाने का तरीका इस प्रकार का हो कि बच्चों की रुचि बनी रहे। उनकी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति भी होती रहे।

सामान्यत: कार्य की प्रकृति तो बच्चों की रुचि के अनुसार होती है पर कार्य की प्रक्रिया को इतना जटिल बना दिया जाता है कि मनपसंद कार्यकलाप होने पर भी बच्चे पूरे उत्साह के साथ कार्य नहीं करते। आशा है, आप इस स्थिति से अवश्य बचेंगे। बच्चों के दैनिक जीवन और उनके परिवार एवं समुदाय की आधारभूत आवश्यकताओं से जुड़े कार्यकलापों का चुनाव ही श्रेयस्कर रहेगा।

**समय और स्थान की उपलब्धता**

हर प्रकार के कार्यकलाप के लिए एक निश्चित समय और उपयुक्त स्थान की आवश्यकता होती है। 'समय' की ज़रूरत को दो कोणों से देखा जा सकता है–

प्रथम – किसी कार्यकलाप विशेष के लिए कितना समय (अवधि) चाहिए?

द्वितीय – कौन-सा कार्यकलाप कब करवाया जाए?

दोनों बिंदुओं पर आप सरलतापूर्वक विचार कर सकते हैं। अपने अनुभवों के आधार पर आप यह निश्चित कर पाएँगे कि अमुक गतिविधि को कितना समय चाहिए। यहाँ गतिविधि की प्रकृति के साथ-साथ कार्य करने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के तौर पर 'विद्यालय परिसर के गमलों पर गेरू रंगने' की गतिविधि के लिए आपने यदि एक घंटा निश्चित किया है तो यह अवश्य सोचा होगा कि हमारे पास कितने गमले हैं, कितने विद्यार्थी हैं और गमले रंगने की सामग्री और गेरु घोलने आदि क्या सभी इसी एक घंटे की अवधि में सम्मिलित है अथवा उसके लिए अलग से समय निश्चित किया गया है! क्या प्रत्येक विद्यार्थी एक-एक गमले पर रंग करेगी/करेगा अथवा यह एक सामूहिक कार्यकलाप होगा? इन सब बिंदुओं के आधार पर गतिविधि की समयावधि निश्चित की जाती है। अवधि के साथ 'कब करवाई' की जाए यह भी गतिविधि के चयन हेतु महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

ऋतुएँ, स्थानीय एवं राष्ट्रीय त्योहार और घटनाओं का समय निसंदेहात्मक रूप से कार्यानुभव संबंधी कार्यकलापों को प्रभावित करता है। उदाहरण के तौर पर जुलाई-अगस्त बागवानी के लिए उपयुक्त रहेंगे। अक्तूबर-नवंबर में अनेक त्योहार पड़ते हैं जैसे दीपावली आदि अत: दीपसज्जा, मोमबत्ती बनाना इसी माह में करवाए जा सकते हैं। विद्यालय की समय-सारिणी को भी ध्यान में रखना ज़रूरी है। जैसे – अप्रैल माह में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। अत: उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए इस माह की सर्वथा उपयुक्त गतिविधियाँ होंगी–

1 प्रवेशार्थी बच्चों के निरक्षर माता-पिता की आवेदन पत्र भरने आदि में मदद करना,
2 समीपस्थ बस्तियों में 6 से 14 वर्ष के बच्चों की संख्या ज्ञात करने हेतु सर्वेक्षण करवाना,
3 'नव विद्यार्थी आगमन' समारोह आयोजित करना,
4 विद्यालय परिसर की सफ़ाई एवं साज-सज्जा।

'समय निर्धारण' के बाद महत्वपूर्ण घटक है 'स्थान'। प्रत्येक गतिविधि के लिए उपयुक्त स्थान का चुनाव किया जा सकता है। आप कदापि यह नहीं चाहेंगे कि स्थान की अनुपयुक्तता के कारण कार्यकलाप के निहित वांछित उद्देश्य प्राप्त नहीं किए जा पा रहे।

यदि विद्यालय में उपयुक्त स्थान नहीं है तो आप विद्यालय की चारदीवारी के बाहर भी अपने कार्यकलापों के क्रियान्वयन हेतु उपयुक्त स्थान खोज सकते हैं।

समुदाय आपकी सहायता के लिए सदैव तत्पर है, यह मान कर चलें। बागवानी, सामुदायिक स्वच्छता, मिÉी का कार्य, जिल्दसाज़ी अनेक

ऐसे कार्यकलाप हैं जिनके लिए आप उपयुक्त स्थान समुदाय की सहायता से खोज सकते हैं।

'स्थान' के संबंध में आप कुछ बिंदुओं पर विचार कर सकते हैं जो प्रश्न के रूप में नीचे दिए जा रहे हैं –

- क्या चुना गया स्थल बच्चों को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम है?
- वैयक्तिक और सामूहिक कार्यकलापों के लिए बच्चों को बैठाने, चलने-फिरने आदि की सुविधा है या नहीं?
- बच्चों द्वारा उपयोग में लाई जानेवाली सामग्री को सुविधापूर्वक रखा जा सकता है या नहीं?
- कार्यकलाप के दौरान आपके द्वारा चल-फिर कर मॉनीटरिंग की जा सकती है अथवा नहीं और आप द्वारा कार्य का प्रदर्शन करते समय सभी बच्चे सरलतापूर्वक देख पा रहे हैं या नहीं?

स्वतंत्र एवं निर्देशित, वैयक्तिक एवं सामूहिक हर प्रकार के कार्यकलाप हेतु स्थान की उपयुक्तता आप द्वारा चुने गए कार्यकलाप के लिए ठोस मापदण्ड प्रस्तुत करेगी।

**अभिभावकों एवं साथी शिक्षकों का सहयोग एवं दृष्टिकोण**

आप द्वारा चयनित कार्यकलाप के प्रति अभिभावकों और साथी शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण आपके लिए प्रत्येक दृष्टि से लाभदायक हो सकता है।

आपके विचारानुसार कोई कार्यकलाप बहुत ही महत्वपूर्ण है परंतु अभिभावकों की समझ में उस कार्य की उपयोगिता उनके बच्चों के लिए कुछ भी नहीं है तो संभवत –

- वे उन दिनों बच्चों को विद्यालय ही न भेजें,
- आवश्यक सामग्री की व्यवस्था न करें,
- आपके प्रति आक्रोश प्रकट करें, ऐसी स्थिति में शिक्षक अभिभावक बैठकों, अनौपचारिक बातचीत आदि के माध्यम से अभिभावकों के विचार जाने जा सकते हैं और उन्हें अपने दृष्टिकोण का परिचय दिया जा सकता है।

सही तरीके से प्रस्तुत की गई बात से वे अवश्य सहमत होंगे।

'विद्यालय परिसर की सफ़ाई में विद्यार्थियों को सम्मिलित करना' कार्यानुभव की एक महत्वपूर्ण गतिविधि है जिससे विद्यार्थी में सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्यों यथा: स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, अपने परिवेश के प्रति संवेदनशीलता, समूह भावना, श्रम की महत्ता आदि का विकास होता है। इस दृष्टिकोण के रहते एक विद्यालय में यही कार्यकलाप करवाया जा रहा था जिस पर कतिपय अभिभावकों ने कड़ी आपत्ति जताई। अभिभावकों के अनुसार उनके बच्चे विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजे जाते हैं न कि सफ़ाई आदि का कार्य करने। शिक्षक ने अभिभावकों और प्रधानाचार्य की आपत्ति के कारण उपरोक्त कार्यकलाप करवाना ही बंद कर दिया। आप संभवत: ऐसा नहीं करेंगे। आप सत्र के आरंभ में ही अभिभावकों एवं अन्य सहयोगियों की मिली-जुली बैठकों में-

- कार्यानुभव की अवधारणा का परिचय देंगे,
- कार्यानुभव के अंतर्गत करवाए जाने वाले कार्यकलापों से अवगत करवाएंगे,

- अभिभावकों की शंका, आपत्ति का समाधान प्रस्तुत करेंगे,
- कार्यकलापों के क्रियान्वयन में सभी का सहयोग आमंत्रित करेंगे,
- कार्यकलापों, स्थान, सामग्री आदि के चयन में अभिभावकों के सुझाव आमंत्रित करेंगे,
- अभिभावकों को स्रोत व्यक्ति के रूप में भी आमंत्रित करने का प्रयास करेंगे।

इस प्रकार विद्यार्थी आपके द्वारा सोचे गए कार्यकलाप से वंचित नहीं रह पाएँगे। यदि आप अपने साथी शिक्षकों और अभिभावकों से संवाद स्थापित कर पाए तो आप उनके दृष्टिकोण भी जान सकेंगे और अपने दृष्टिकोण से उन्हें भी परिचित करा सकेंगें।

**संसाधनों की उपलब्धता**

शिक्षक की इच्छा है वह अपने विद्यार्थियों को सीपियों की सहायता से कुछ कार्य करवाएँ क्योंकि उसकी शिक्षिका ने भी सीपियों का कार्य कर उसके अंदर की रचनात्मक शक्ति और सौंदर्यानुभूति का विकास किया था। इसी सोच के रहते वह विद्यार्थियों को तरह-तरह की आकृति और आकार वाली सीपियाँ लाने के लिए कहती हैं। आप अगले दिन के दृश्य का अनुमान कर सकते हैं। जी हाँ 40 बच्चों की संख्या में से मात्र 3 विद्यार्थी सीपियाँ लाए हैं वह भी संख्या में बहुत कम।

शिक्षिका निराश है। दो दिन का समय देती है। दो चार दिन बाद भी स्थिति वही है। उसके अनुसार -

- बच्चे इतनी सुंदर गतिविधि क्यों नहीं करना चाहते?
- अभिभावक सामग्री जुटाने में मदद क्यों नहीं करते?

आप तो ऐसा नहीं सोच रहे न? आपने सही समझा, संसाधन और सामग्री का चुनाव स्थानीय परिवेश से हटकर कैसे हो सकता है। नदी, समुद्र आदि के किनारे बसे कस्बों शहरों के बच्चों से तो अपेक्षा की जा सकती है सीपियाँ इकëी करने की परंतु हर क्षेत्र के बच्चे तो प्रत्येक वस्तु का जुगाड़ नहीं कर सकते। हाँ, यह बात ज़रूर है कि सीपियाँ खरीदी भी जा सकती है पर क्या हर बच्चे का सामर्थ्य है खरीदने का? दूसरी महत्वपूर्ण बात, खरीदकर एकत्रित की गई सामग्री द्वारा क्या कार्यकलाप में निहित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकेगा?

**अधिकारियों की सकारात्मक इच्छा शक्ति**

आपके द्वारा चयनित कार्यकलापों के क्रियान्वयन हेतु आपके विद्यालय के अधिकारियों का सहयोग अनिवार्य रूप से अपेक्षित है। वे न केवल आपको भावनात्मक संबल देंगे अपितु कार्यकलाप हेतु विद्यालय समय-सारिणी में उचित और पर्याप्त समय, स्थान, संसाधन आदि की समुचित व्यवस्था करने में पूरा सहयोग देंगे। यदि आप द्वारा चनित कार्यकलापों में उन्हें आपत्ति है तो उनके साथ संवाद स्थापित कर अपने दृष्टिकोण से उन्हें अवगत करवाएँ और उनके मत को भी समझने का प्रयास करें।

❑❑❑